द्वितीय अध्याय

“विवेच्य उपन्यासों का कथावस्तुगत अनुशीलन”

दवितीय अध्याय

“विवेच्य उपन्यासों का कथावस्तुगत अनुशीलन”

विषय प्रवेश :

हिंदी दलित साहित्य में प्रतिभासंपन्न तथा शीर्षस्थ साहित्यकार के रूप में जयप्रकाश कर्दम जी का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कलम समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों की पक्षधर है। उनके विवेच्य उपन्यास स्वानुभूति एवं सहानुभूति के तथ्यों को आधार बनाकर भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से पीड़ित शोषित दलित समाज के जीवन संघर्ष की गाथा को प्रवाहित करते हैं। उन्होंने अपने विवेच्य उपन्यासों में गुलामी की जंजीरों को छेदकर स्वाभिमानी जीवन जिने की छटपटाहट करनेवाले मानव को वाणी प्रदान की है। विवेच्य उपन्यास ‘करुणा’ और ‘छप्पर’ इन बातों का संकेत देते हैं कि उनके विचार दलित समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि अधिकारों की वैचारिक जागृतिकी तथा सामाजिक परिवर्तन की माँग करके शोषण, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करते हैं। उनमें निहित तथ्य निश्चित ध्येयपूर्ति में सक्षम दृष्टिगोचर हैं। अत: उनके विवेच्य उपन्यासों का कथावस्तुगत अनुशीलन का विवेचन तथा विश्लेषण विस्तृत रूप में यहाँ पर इस प्रकार प्रस्तुत है -

2.1 कथावस्तु का स्वरूप तथा महत्त्व :

कथ्य से तात्पर्य है कि कहने योग्य या कथनीय।[1] कथ्य को अंग्रेजी में ‘CONTENT’ कहा है। कथ्य का कोशगत अर्थ है - “अन्तर्वस्तु, अंदर रखी हुई वस्तु, विषयवस्तु सार अथवा विचार या धारणा का मूलतत्व।”[2] फास्टर इ.एम.विद्वान के मतानुसार कथावस्तु से तात्पर्य “संयोगाश्रित घटनावली का श्रृंखलावदध नियोजन कथावस्तु कहलाता है।”[3] उपन्यासकार कथानक का चयन इतिहास, पुराण, परंपरा

जीवन आदि के यथार्थता और उसमें कल्पना का समावेश समन्वित रूप से करता है। उपन्यास की कथावस्तु में कथा की घटनाओं को संयोजित किया जाता है। कथावस्तु का घटनाक्रम में सामंजस्य के साथ-साथ उनमें उचित अनुपात होना भी जरूरी है। अर्थात कथावस्तु से अभिप्राय है घटनाओं का कुशल संगठन। उपन्यास के कथावस्तु निर्माण प्रक्रिया के बारे में डॉ.त्रिभुवन सिंह लिखते हैं - "कथावस्तु के ढाँचे में ही उपन्यासकार घटनाओं के विभिन्न रंग भरकर अपने उपन्यास रूपी सुंदरतम चित्र का निर्माण करता है। चित्र निर्माण में जिस प्रकार चित्रकार अनेक रंगों का प्रयोग करता है, उसी प्रकार उपन्यास लेखन में भी उपन्यासकार एकाधिक घटनाओं का यथाक्रम एक ही स्थान पर संकलन करता है।"[4] अत: उक्त कथन इस बात का संकेत है कि उपन्यासकार कथा-निर्माण में भिन्न-भिन्न घटनाओं को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

कथानक औपन्यासिक रचना-शिल्प का सर्वप्रमुख तत्व है। डॉ.प्रदीप कुमार वर्मा उपन्यास के कथानक की महत्ता के बारे में कहते है कि - "शरीर में हड्डियों के ढाँचे का जो स्थान है वहीं उपन्यास में कथावस्तु का है।"[5] अत: यदि उपन्यास को कलात्मक एवं सशक्त रचना बनाना है तो उसके कथानक का महत्त्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। किसी भी उपन्यासकार का प्रथम कर्तव्य है, कि वह अपनी कथावस्तु का निरूपण करते समय जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करें। कथावस्तु के चयन की एकमात्र कसौटी यह है, कि वह जीवन को समग्र और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करें।

उपन्यास के कथानक में तीन गुणों का होना अत्यंत आवश्यक है... रोचकता, संभाव्यता और मौलिकता। रोचकता लाने के लिए कौतुहल का निर्माण आवश्यक है। ना.सी.फडके ने कथानक की श्रेष्ठता का आधार कौतुहल मानते हुए कहा है, कि "जिस तरह पर्वत यात्री एक चोटी पर पहुँचने के बाद मार्ग के एक मोड़पर पहुँचने के उपरान्त, दूसरे दृश्य को देखने के लिए आतुर एवं उत्साहित हो उठता है, उसी प्रकार उपन्यास का पाठक भी कथा लिए एक मोड़ पर पहुँचने के बाद आगे की कथा के संबंध

में जिज्ञासा, अनुभव करें।"[6]

उपन्यास की कथावस्तु के आवश्यक पहलुओं का विवरण संक्षिप्त रूप में इसप्रकार है -

1. उपन्यास का कथानक किसी भी स्रोत से ग्रहण किया जा सकता है।
2. कथानक का निर्माण परंपराविहित विधान के अनुसार होना आवश्यक है।
3. कथानक में विश्वासनीयता और सत्य हो।
4. कथानक में घटना प्रवाह की स्वाभाविकता को बनाये रखना आवश्यक है।
5. उपन्यास का कथानक अन्य लेखकों के कथानक का अनुकरण न हो।
6. उपन्यास में अपनी प्रतिभा के अनुसार रचनाओं में नवीनता का सृजन हो।
7. कथानक में कौतुहल वृद्धिगत करने की क्षमता हो।
8. कथानक का आरंभ तथा अंत उद्देश्यपूर्ति में सक्षम हो।
9. कथानक में प्रयोगशीलता हो।

अत: उक्त विवेचन उपन्यास में कथानक का स्वरूप तथा महत्त्व को स्पष्ट करता है कि कथानक उपन्यास की रचना में मेरुदण्ड की भाँति कार्यरत है। उसका स्वरूप वैविध्यपूर्ण एवं महत्त्व अक्षुण्ण है। इसी कसौटी पर जयप्रकाश जी की विवेच्य रचनाएँ कहाँ तक उतर सकती हैं, इसे हम यहाँ देखेंगे -

2.2 विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु :

जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' इन उपन्यासों की कथावस्तु का विवरण यहाँ पर इसप्रकार प्रस्तुत है -

2.2.1 'करुणा' उपन्यास की कथावस्तु :

प्रस्तावना :

जयप्रकाश कर्दम जी का 'करुणा' यह लघु-उपन्यास सन् 1986 में,

'भारत सावित्री प्रकाशन, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस लघु-उपन्यास के लेखकने स्वयं भगवान गौतम बुद्ध और उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर 'करुणा' उपन्यास का सृजन किया है। इस लघु-उपन्यास का शीर्षक उपन्यास की नायिका 'करुणा' के नाम पर आधारित है। लेखक इस लघु-उपन्यास के आत्मकथ्य में शीर्षक के वारे में इस बात का संकेत देते है कि, "यद्यपि उपन्यास की नायिका 'करुणा' एक भिक्षुणी है तथा वहीं इस उपन्यास का आधार भी है।"[7] अत: इस उपन्यास में भगवान गौतम बुद्ध के मानतावादी विचार विश्वशांति तथा आदर्श समाज की संकल्पना के रूप का अंकन किया हुआ है।

2.2.1.1 मुख्य कथा :

प्रस्तुत इस लघु-उपन्यास की नायिका 'करुणा' एक मध्यवर्गीय परिवार की शिक्षित लड़की है। 'करुणा' के पिता टैक्सी ड्राईवर का काम करते थे। उनका परिवार कुल पाँच सदस्यों का हैं। इनमें दो लड़के, एक लड़की और पति-पत्नी स्वयं। 'करुणा' का वड़ा भाई फौज में है किन्तु वह विवाहपूर्व सरहद पर मुठभेड़ में देश के लिए शहीद हुआ है। करुणा का दूसरा भाई हायर सेकेण्ड्री में पढ़ाई करता है साथ ही वह एक कुशल तैराकी है जो एक दिन राज्य स्तर के तैराकी प्रतियोगिता में प्रथम पदक जीतकर घर लौटते समय वस दुर्घटना में उसकी मृत्यु हुई। अत: करुणा घर में सबसे छोटी तथा माता-पिता की स्नेहमयी इकलौती संतान रही। माता-पिता के जीवन का एक मात्र आधार करुणा रही जो उसी के सहारे वे स्वयं दुनियां से जुड़े हुए थे। यहाँ करुणा के जीवन में उभरे दु:खों को लेखक ने दिखाया है।

करुणा की बचपन से ही पढ़ाई और चित्रकला एवं संगीत में गहरी रुचि रहती है। वह अपने युवावस्था में कॉलेज के एक प्रभावी व्यक्तित्व तथा प्रतिभा संपन्न शिक्षित युवक 'रमेश'की ओर आकर्षित होती है। रमेश सितार वादक तथा साहित्यिक कलाओं में निपुण है। उसने एक उपन्यास भी लिखा है। करुणा रमेश के इन गुणों से

मोहित होकर धीरे-धीरे उसके साथ गहरा आत्मिक परिचय बढ़ाती है। करुणा के मन में रमेश के प्रति प्रेम के अंकुर पल्लवित होते हैं। करुणा रमेश को अपने जीवन सफर का साथी के रूप में देखने लगती है। तथा रमेश को लेकर वह दिन-ब-दिन भविष्य की कल्पनाओं के अवकाश में विचरण करती रहती है। भविष्य की नई-नई योजनाओं को बुनती रहती है। किन्तु एक दिन की घटित दुर्घटना ने करुणा के जीवन की समस्त आशा-आकाक्षाओं का महल कुछ ही पलों में रेत की तरह ढ़ह दिया। करुणा के मन की कोमल भावनाएं क्षतविक्षत हुई।

'करुणा' का जीवन साथी रमेश जो पारंपारिक सामाजिक परिस्थितियों के घात-प्रतिघातों में टूटता जाता है। वह नौकरी के लिए नसबंदी का ऑपरेशन करता है और एक दुर्घटना में कटी प्रदेश पर भीषण आघात होने के कारण अजीवन अविवाहित रह जाता है, तथा स्वयं की बहन रीता की हत्या के झूठे आरोप में जेल जाता है। इन सभी घटनाओं में शोषण का शिकार बना रमेश को देखकर करुणा अपने जीवन के प्रति निराश होती है। वह निराशा के साए में सोचती है कि - "जीवन में जिस चीज की लालसा थी वहीं न पा सकी।"[8] वर्षो पहले उसने अपने मन में जो सपना संजोया था वह वक्त की आंधी से खंड-खंड हो गया। उसने कभी कल्पना भी न की थी कि उसे इस विडंबना का शिकार होना पड़ेगा। पर समय की गति कितनी बलवती होती है, उसके आगे किसी का वश नहीं चलता।

अत: करुणा के जीवन में घटित यह दुर्घटना उसे उड़ते पंछी के पर उखाड़ने के वेदना की भाँति पीड़ा देती है। करुणा इस यातनामयी जीवन से उबकर स्वयं को समाप्त करने की सोचती है। किन्तु वह सोच-समझकर कहती है कि "जीवन से पलायन करना बहादूरी नहीं अपितु कायरता है।"[9] करुणा अपने साहस को जुटाकर जिंदगी से समझौता कर के जीवन सफर की राही बनती है।

करुणा अपने व्यथित मन के कारण जीवन यथार्थ के बारे में चिंतन करने

लगती है। करुणा मन-ही-मन में सोचती रही कि जीवन क्या है, उसका यथार्थ क्या है? करुणा के मन मस्तिष्क को ये विचार झकझोरते हैं और वह कई दिनों तक इस पर सोचती रहती है। करुणा के घर के समीप ही विशाल बुध्द विहार स्थित था। उस बुध्दविहार में अनेक भिक्षु तथा भिक्षुणी चीवरधारी ब्रह्मचर्य के तेजपुंज मुख और भाव गंभीर चित्तावस्था में स्थिर रहते हैं। वे मन को मोह तथा लिप्साओं से दूर रखते हैं। करुणा का धर्म ब्राह्मण था किन्तु उसे इन तिलकधारी हिंदू-साधू बौध्द भिक्षुओं की तुलना में तुच्छ लगते हैं। करुणा के मन में बुद्ध विहार, भिक्षु-भिक्षुणी इनके तथ्यों को लेकर धीरे-धीरे सत्य जानने की जिज्ञासा होती है। वह एक दिन एक भिक्षुणी के सामने अपनी यह जिज्ञासा को व्यक्त करती हुई कहती है - "इस भिक्षु जीवन में आपको कौन-सा सुख मिलता है, जो सांसारिक सुखों से श्रेष्ठ हैं? [10]

भिक्षुणी ने बताया "सांसारिक जीवन में सुख है ही कहाँ। सव कुछ दु:खमय है। जन्म से जाति, जरा, मरण, सब दु:ख है। वांछित वस्तु का न मिलना दु:ख है। अवांच्छित वस्तु का मिलना दु:ख है। प्रिय का वियोग दु:ख है, अप्रिय का संयोग दु:ख है। दरिद्रता और अभाव दु:ख है। शत्रु से भय, शंका, रहना दु:ख है। विषयों के प्रति राग, आसक्ति में यहां तक कि सभी कुछ दु:खमय है। सारा जीवन दु:खों से भरा है। मनुष्य दु:ख में पैंदा होता है, तृष्णा के कारण राग और आसक्ति में डूवा मनुष्य जीवनभर दु:ख भोगता है और दु:ख सहते-सहते ही मर जाता है। विषयों के प्रति अनासक्ति और तृष्णा के नाश में ही सुख है।"[11] करुणा दार्शनिकता पर चिंतन करती हुई सुख, दु:ख, जरा-मरण, संयोग-वियोग, राग-आसक्ति आदि के माध्यम से जीवन की तलाश करना चाहती है।

अत: करुणा बौद्ध भिक्षुणी के इन सांसारिक भौतिक विचारों तथा सुख-दु:ख एवं तृष्णा, राग-आसक्ति इन पर चिंतन, मनन करती है और आप वीती रमेश का स्मरण होते ही उसके मन-मस्तिष्क में विचार आता है कि "जिसको अपने

जीवन का आधार बनाया जिसके संसर्ग में ही जीने की कल्पना की, आज वही पीड़ा और विषाद का कारण बन गया है।"[12]

करुणा इन विचारों पर अंतिम निर्णय करके भौतिक जीवन का त्याग करके वह बनारस के समीप स्थित सारनाथ के बौद्ध विहार में जाकर बौद्ध दीक्षा ग्रहण कर भिक्षुणी संघ में सम्मिलित होती है। इस भिक्षुणी के रूप में करुणा के जीवन में नया परिवर्तन आकर उसका जीवन अंधकार, निराशा, पीड़ा की छाया से निकलकर आध्यात्म तथा समाजकल्याण के पथ पर अग्रेसर होता है। करुणा का जीवन क्रम बुध्द वंदना, प्रवचन सुनना, ध्यान साधना करना आदि के साथ प्रफुल्लित होता जाता है। यहाँ करुणा का आत्मशांति के लिए बौद्धधर्म का स्वीकार और बौद्ध भिक्षुणी के रूप में संचार चिंतन योग्य है।

करुणा धीरे-धीरे बौद्ध तत्वज्ञान को आत्मसात करने के लिए बौद्ध भाषा पाली का ज्ञान गृहण करके त्रिपिटक जैसे बौद्ध साहित्य के अध्ययन में गहरी रुचि रखती है। वह अपने ज्ञान के सहारे समाज में जाकर स्त्रियों को बुद्ध के पंचशील और अष्टांगमार्ग का उपदेश देने का कार्य करती है। सध्या कुछ ही दिनों में वह संघ के सभी भिक्षु-भिक्षुणी के श्रद्धा के पात्र बनती है।

करुणा बौद्ध धर्म के शिक्षा के साथ-साथ समाज के गरीब तथा बीमार लोगों की सेवा सुश्रृषा सेवाभाव से करती है। करुणा भिक्षु संघ में भी भिक्षु लोगों को प्रज्ञा के साथ-साथ शील के पालन का महत्त्व समझाकर उन्हें उपदेश देती है। करुणा अपने त्याग तथा सामाजिक कार्य के बल पर दिल्ली के बुद्ध विहार तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य केंद्र की प्रमुख बनती है। वह भगवान गौतम बुद्ध के "जो सबसे आवश्यक चीज है वह है मैत्रीपूर्ण हृदय।... दुखी को दुख से निकालकर सुख और सांत्वना दो।"[13] इस संदेश को अपने जीवन में आत्मसात करके इसका पालन करना अपना नैतिक कर्तव्य समझती है।

करुणा बौद्ध धर्म के समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों का समाज में प्रचार और प्रसार में अपने जीवन को समर्पित करने का दृढ संकल्प करती है। वह समाज कल्याण को अपनाकर भौतिक जीवन को त्याग कर, बौद्ध धम्म तथा तत्वज्ञान को स्विकारते हुए कहती है कि "यही ऐसा रास्ता है, जिस पर चलकर अपना भी तथा समाज के दूसरे लोगों का भी कल्याण किया जा सकता है।"[14]

अत: करुणा भगवान गौतम बौद्ध के मानवतावादी विचारों को मानवहित तथा राष्ट्र समुन्नत एवं विकास का मार्ग बताकर बौद्ध धम्म की महत्ता को उजागर करती है।करुणा अपने नाम के अर्थ को सार्थकता प्रदान करती हुई दृष्टिगोचर है।

यहाँ करुणा की 'करुणा' व्यापक रूप धारण करके विश्वशांति का सबक बन जाती है। यहाँ धार्मिक तत्वज्ञान और आत्मशांति के मार्ग को प्रशस्त बनाया है।

2.2.1.2 गौण कथा :

प्रस्तुत उपन्यास में करुणा की प्रमुख कथा को बढ़ावा देने के लिए रमेश की, रमेश की बहन रीता की, ठाकुर सुखदेव सिंह की कथाएँ गौण कथाएँ है।रमेश मध्यवर्गीय परिवार का शिक्षित युवक है। उसके पिता हरिशंकर सरकारी कार्यालय में क्लर्क की नौकरी करते थे। उनका परिवार सुखी और संपन्न था। रमेश के पिता की सेवा निवृत्ति के पश्चात घर की जनसंख्या अनियंत्रित होने से उनका परिवार आर्थिक अभावों से त्रस्त होता है। रमेश अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर नौकरी की तलाश में निकलता है। उस समय देश में भ्रष्ट राजनीति तथा अव्यवस्थित प्रशासन व्यवस्था चारों ओर फैली थी। सरकार ने बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए नसबंदी कार्यक्रम का आयोजन किया था जिसमें सामान्य जन का शोषण होता रहा था। रमेश के कंधों पर घर की जिम्मेदारी आने से वह इन परिस्थितियों के समक्ष समर्पित होकर एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी के लिए नसबंदी के शोषण का शिकार बनता है। इस बात की जानकारी रमेश के माता-पिता को मिलते ही उन्हें दु:ख होता है कि अपनी आँखों के

सामने जवान बेटे के जीवन को इस तरह नष्ट होते देखना। इस पीड़ा की यातना से उनकी असमय मृत्यु होती है। अत: माता-पिता की मृत्यु के पश्चात अपने भाई-वहन के सुख-सुविधाओं के लिए रमेश अपने सुखों को तिलांजलि देकर स्वयं को उनके हित हेतु समर्पित करता है। यहाँ राजनीति की और प्रशासन की अति भयंकरता को दिखाकर अभावपूर्ति के लिए कटिबद्ध युवकों पर नौकरी के लिए नसबंदी की दवाव की नीति को उजागर किया है।

रमेश को रीता नामक एक वहन थी। रीता युवावस्था में ही रमेश उसकी शादी एक अच्छा-सा घर देखकर करता है। किन्तु रीता को शादी के वाद कई सालों तक वच्चा नहीं होता है इसलिए उसके ससुराल के लोग उसे घर के वाहर निकालते हैं। रीता ससुराल से सीधा अपने भाई रमेश के यहाँ आकर रहती है। कुछ ही दिनों के पश्चात रीता जीवन के प्रति पूर्णत: विरक्त होकर एक दिन संयम खोकर घर की पुताई के समय नीला थोथा खाकर आत्महत्या करती है। असमय नसबंदी का शिकार, वहन की गृहस्थी का विखराव आदि के कारण रमेश टूट जाता है।

ठाकुर सुखदेवसिंह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति धामपुर गाँव के सरपंच है। उसका वेटा सूरज उद्दण्ड और शरारती है। सूरज की पढ़ाई-लिखाई की वात तो दूर वह दिन भर गांव में गंदी हरकतें करता रहता है। वह फिल्में देखना और राह चलती लड़कियों के साथ छेड़-छाड़ करता है। सूरज एक दिन गाँव के गरीव दलित मजदूर किसान भूल्लन की वेटी अंगूरी के साथ वलात्कार करने की चेष्टा करता है। उसकी इस हरकत के खिलाफ रमेश आवाज उठाता है, क्योंकि फिर कभी किसी दलित नारी के साथ ऐसा न हो। वह गाँव में पंचायत वुलाकर सूरज के खिलाफ लोगों के वयान लेकर पंचों के निर्णय द्वारा सूरज को गाँव से दो साल के लिए निष्कासित करने की सजा दिलाता है। इसके पश्चात सूरज गाँव छोड़ते समय रमेश के प्रतिशोध की भावना मन में धारण करके शहर चला जाता है। वह शहर जाकर पुलिसवालों को पैसे देकर रमेश को

SHIVAJI UNIVERSITY ... KOLHAPUR

उसकी बहन रीता की हत्या के झूठे अभियोग में फँसाकर जेल भेजता है।

रमेश जेल जाते ही उसका परिवार पुनश्च: आर्थिक अभावों से पीड़ित होता है। किन्तु रमेश के पश्चात उसका छोटा भाई आखिल अपनी पढ़ाई छोड़कर फलों की दुकान लगाकर अपने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेता है। जेल की कोठरी में कैद रमेश अपने टूटते परिवार को देखकर इन जेल के भ्रष्ट अफसरों के प्रति मन में घृणा करते हुए कहता है कि "इन सबका वजूद क्या है? मेरी अंगुली के एक पोर के भी तो बराबर नहीं है ये सब के सब।"[15] रमेश उस पर हुए अन्याय के प्रतिकार रूप स्वयं को ईमानदार समझकर समाज में व्याप्त दूराचार के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है कि "समाज का न तो न्याय के प्रति आग्रह है और न वह ईमानदार लोगों के लिए सुरक्षा कवच ही।"[16] अत: रमेश जेल में रहकर विद्रोही बनता है, वह समाज को स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों का समूह मानता है। वह कहता है कि "केवल वहीं लोग सुरक्षित है तथा उनके साथ ही न्याय होता है जो समृद्ध हैं, शक्तिशाली हैं।"[17] यहाँ परिस्थितियों से टकरानेवाला रमेश परिस्थिति के खिलाफ चेतित हो उठता है।

एक दिन रमेश के पासवाली कोठरी में एक नया कैंदी आता है। वह साहसी तथा विद्रोही है। वह जेल में होनेवाले कैदियों के ऊपर अन्याय, अत्याचार का विरोध करके उन्हें उनके मौलिक अधिकारों के प्रति जागृति करता है। वह संगठन में संघर्ष की ताकत है, ऐसा उन्हें समझाकर अन्याय के खिलाफ सार्थक संघर्ष करने की प्रेरणा देता हैं। वह सभी कैदियों से कहता है कि तुम सब लोग हुक्का चुराना, सेंध लगाना, जेब काटना ये काम छोड़कर पूँजीपतियों की हत्या करके गरीव कमजोर लोगों को शोषण से मुक्ति दिलाने का प्रयास करें। वह कहता है कि "मैंने लोगों को जीने का ढंग बताया, शोषण और अत्याचार के विरूद्ध लड़ने के लिए इकट्ठा किया। उनको गली कूचों से निकालकर सड़क पर ले आया। इस जुर्म में मुझे कैंद किया है।"[18]
शोषितों की क्रांतिकारी भावना यहाँ उभर उठी है।

आखिल रमेश को जेल में मिलने के लिए बार-बार आता है। रमेश को दु:ख होता है कि आखिल को इन परिस्थितियों के समक्ष पढ़ाई छोड़कर काम करना पड़ रहा है। रमेश शारीरिक पीड़ा से त्रस्त था ही अब मानसिक पीड़ा से भी त्रस्त होता है। रमेश समाज व्यवस्था एवं शासन पद्धति दोनों के खिलाफ घृणा करते हुए कहता है कि "जहाँ पर आदमी के अधिकारों का इस तरह हनन हो, जहाँ एक जवान और अविवाहित व्यक्ति को खस्सी होने को मजबूर होना पड़े ऐसे समाज और ऐसी व्यवस्था का क्या लाभ।"[19] अत: रमेश जीवन में निराश होकर सोचता है कि करुणा को बताना चाहिए था कि अतीत की यादों को भूलकर अपने जीवन के वर्तमान और भविष्य को सँवारे। तथा जीवन से समझौता करके उसे नये ढंग से जीए। किन्तु रमेश करुणा से यह बातें नहीं कह सकता।

रमेश जेल में रहकर उस विद्रोही कैदी के बातों पर सोचता है और संपूर्ण समाज को अपने अन्याय के प्रति दोषी न ठहराते हुए भ्रष्ट मानसिकता से ग्रस्त पूँजीपतियों के खिलाफ डटकर संघर्ष करने का संकल्प करता है। रमेश समाज से गंदी सोच को निकाल कर एक समन्वयवादी समाज की स्थापना करने के लिए समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों पर स्थापित आदर्श समाज की संकल्पना मन में लेकर, जेल से छूटते ही इस कार्य की पूर्ति के लिए अपने-आपको समर्पित करने का निश्चय करता है। यहॉ पर युवकों में सामाजिक दायित्व बोध के प्रति सजगता दिखाई देती हैं।

रमेश जेल से छूटते ही पहले बुद्ध विहार में जाकर बुद्ध वंदना करता है। वहाँ पर करुणा को बौद्ध भिक्षुणी के रूप में देखकर विस्मय से चकरा जाता है। रमेश करुणा के त्याग के पीछे की सोच समझकर उससे बौद्ध भिक्षु के जीवन का रहस्य जानता है। करुणा भगवान गौतम बुद्ध के आदर्श समाज की संकल्पना, पंचशील तत्त्व, अष्टांग मार्ग की शिक्षा तथा इससे मानवी जीवन में परिवर्तन के पहलुओं को उजागर करके बौद्ध

धम्म की महत्ता को मानव जीवन में जो आवश्यकता है उसे बताती है।

रमेश के मन में स्थित समाज के सभी विचार बौद्ध धम्म में पाकर वह भी करुणा से धम्म की दीक्षा लेता है और रमेश से कुछ ही दिनों में भिक्षु रत्नाकर वन जाता है। रमेश समाजहित के लिए बुद्ध के तत्वज्ञान का उपयोग कर आदर्श समाज निर्माण करने के लिए सांसारिक जीवन से त्याग लेकर अपने-आपको समर्पित करता है।

2.2.1.3 सवर्ण-दलित संघर्ष की स्थिति :

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात भी भारतीय समाज व्यवस्था में निम्न वर्ग निरंतर शोषण की चक्की में पीसता आ रहा हैं। दलित समाज का सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक शोषण उच्चवर्ग हमेशा करता रहता हैं। किन्तु समय के साथ-साथ समाज सुधारकों द्वारा दलित उत्थान हेतु किए गए कार्यो तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार से दलितों में अन्याय-अत्याचार के खिलाफ जागृति हो रही है। आज आरक्षण नीति के कारण यह संघर्ष अधिक पनपता हुआ दिखाई दे रहा है।

प्रस्तुत करुणा इस लघु उपन्यास कें धामपुर गाँव का प्रतिष्ठित ठाकुर सुखदेव सिंह एक सरपंच है। उन्हें सूरज नामक बेटा हैं जो उदण्ड और शरारती है। गाँव के ठाकुर जमींदार लोग दलित नारी का दैहिक शोषण करना अपना अधिकार समझते है। ठाकुर साहब का बेटा सूरज एक दलित गरीब मजदूर की वेटी को अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए कई प्रलोभन देने के प्रयास करता है। किन्तु अंगूरी के नकार से सूरज का पशुत्व हिंसा पर उतर आता है। वह उस पर वलात्कार करने का प्रयास करता है। इस अन्याय, अत्याचार के खिलाफ उसका पिता गरीव भूल्लन ठाकुर से संघर्ष मोल लेने को असमर्थता दिखाता है। किन्तु ऐसी घटना फिर किसी दलित नारी के साथ घटित न हो इसलिए उसी गाँव का शिक्षित दलित युवक रमेश सूरज ठाकुर साहव के खिलाफ आवाज उठाता है। वह पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करने की सोचता है किन्तु ठाकुर पुलिसवालों को पैसे देकर मामले को रफा-दफा कर देंगे इसलिए रमेश गाँव में ही

पंचायत बुलाकर उसमें पंचों द्वारा सूरज को दंडित करता है। उसे गाँव से दो सालों के लिए निष्कासित किया जाता है। सूरज गाँव को छोड़ता है किन्तु रमेश के प्रति प्रतिशोध की भावना को मन में लेकर ही। वह कहता है कि "कसम भगवान की रमेश को जेल की रोटी न खिलवा दी तो मेरा भी नाम सूरज नहीं।"[20]

अत: रमेश तथा ठाकुर सूरज के बीच का संघर्ष उच्चवर्गीय सवर्ण लोगों की हुकूमत के खिलाफ रमेश द्वारा किया गया प्रतिकार सवर्ण-दलित संघर्ष की स्थिति का संकेत देता है।

2.2.1.4 कथावस्तु का समाज जीवन से जुड़ाव :

जयप्रकाश कर्दम जी ने प्रस्तुत लघु उपन्यास 'करुणा' का सृजन बौद्ध धम्म तथा उसमें निहित मानवतावादी मूल्य एवं उससे निर्मित्त आदर्श समाज का रूप केंद्र में रखकर किया है। इस लघु-उपन्यास का कथ्य भगवान गौतम बुद्ध के सिद्धातों का मानवीय जीवन तथा समाज में महत्व को उजागर करता है। जैसे "बुद्ध के सिद्धांतों में ऐसी ही उत्कट प्रेरणा है कि जिन्हें अपनाने वाले सब लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम और सद्भाव से रहते हैं। भगवान बुद्ध के सिद्धांतों में न्याय के प्रति आग्रह हैं। समता मैत्री और भाईचारा इन सिद्धांतों का मूल है। इसी से सुखी और संपन्न समाज का निर्माण हो सकता है। भगवान बुद्ध के मध्यम मार्ग को अपनाने से ही समाज और राष्ट्र समुन्नत एवं सुविकसित होता हैं।"[21]

अत: इस लघु उपन्यास में भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्ट राजनीति तथा हर जगह शोषण का साम्राज्य और मानव को हानि पहुँचानेवाले धर्म के खोखले मूल्य को प्रस्तुत कर एक समतावादी धर्म तथा समाज के रूप में बौद्ध धम्म की महत्ता तथा उसकी आदर्श समाज की संकल्पना को स्पष्ट किया है। अर्थात उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस उपन्यास के मूल में मानव केंद्रिभूत है, जिससे उपन्यास का कथ्य समाज जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं के साथ जुड़ा हुआ है।

2.2.1.5 उच्चशिक्षित दलितों की पीड़ा :

शिक्षा दलित समाज की रक्षा तथा सामाजिक क्रांति का सशक्त शस्त्र है। शिक्षा व्यक्ति की अस्मिता को बनाए रखने का महत् कार्य करती है। उसमें आशा तथा विश्वास पैंदा करती है। भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक विकास तथा उत्थान के कार्य शिक्षित व्यक्ति द्वारा ही हुए हैं। जयप्रकाश कर्दम जी का लघु उपन्यास 'करुणा' में शिक्षित दलित युवक रमेश सामाजिक दायित्वों से सचेत है। इस समाज की व्यथा-कथा की पीड़ियों से त्रस्त हैं, जैसे कि "समाज के पंगुपन का भी उसे पूरा अहसास था और वह अच्छी तरह जानता था कि समाज की इस पंगुता का कारण उसमें लोक चेतना का अभाव ही है। केवल मुट्ठी भर पूँजीपति और जमींदार लोग ही प्रगति के रास्ते पर दौड़ लगा रहे हैं। शेष समाज पंगु बना हुआ है। समाज का यह पंगुपन अधिकार और न्याय चेतना के विकास से दूर होगा जिस दिन भी समाज में लोक चेतना पैंदा हो जाएगी उसी दिन अपने श्रम से इस समाज को सींचने के उपरान्त भी, सदैव उपेक्षित, तिरष्कृत रहने वाला यह गरीब वर्ग एक झटके में शोषण की तमाम जंजीरों को तोड़कर फेंक देगा। तथा अन्याय और असमानता पर अधारित इस समाज की सारी व्यवस्था को खण्ड-भण्ड कर देगा।"[22]

अत: इस उपन्यास का शिक्षित दलित युवक भेदभाव विरहित आदर्श समाज का निर्माण करने के लिए कार्यरत है। वह समाज में व्याप्त स्वार्थपरता, धोखेवाजी, भ्रष्ट प्रशासन तथा सरकारी अधिकारी की शोषण नीति आदि से पीड़ित है। इसका यथार्थ रूप में अंकन उक्त उपन्यास के कथ्य में दृष्टिगोचर है।

2.2.2 'छप्पर' उपन्यास की कथावस्तु -

प्रस्तावना :

जयप्रकाश कर्दम जी का 'छप्पर' उपन्यास सन् 1994 में 'समता प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का हिन्दी साहित्य जगत पर व्यापक प्रभाव

दृष्टिगोचर है। यह रचना हिंदी दलित साहित्य की एक अनिवार्य कृति है जो हिंदी दलित साहित्य पर कोई भी सार्थक चर्चा 'छप्पर' के विना अधूरी है। गाँवों के दलित झोपड़ियों में रहते हैं, वे आर्थिक अभावों के साथ अधिक सामाजिक, आर्थिक शोषण, अपमान, उपेक्षा के शिकार होते हैं। छप्पर इसी दलित जीवन का प्रतीक हैं। तथा 'छप्पर' रचना सृजन के मूल में जयप्रकाश जी कहते हैं - एक दलित छात्र को शहर की पढ़ाई छोड़कर सवर्णो के दवाओं के कारण गाँव आना पड़ा, इस घटना ने मुझे छकछोर दिया, उसका शिक्षा का अधिकार गाँव के सवर्णो ने छिन लिया, इससे 'छप्पर' लिखने की प्रेरणा मिली। अत: बीसवीं सदी के अंतिम दशक की कर्दम द्वारा लिखी गयी रचना 'छप्पर' यह दलितों की संघर्ष गाथा है। सन् 1960 के बाद मराठी में स्वतंत्र साहित्यिक प्रवाह के रूप में दलित साहित्य लिखा गया। इसके पहले किसी भी भारतीय भाषा साहित्य में यह दलित साहित्य धारा स्वतंत्र रूप में कार्यरत नहीं थी। मराठी के अनुकरण पर हिंदी में अनेक दलित रचनाएँ लिखी गयी। इनमें से 'छप्पर' एक सशक्त औपन्यासिक रचना लगती है।

2.2.2.1 मुख्य कथा :

'छप्पर' उपन्यास का नायक 'चंदन' स्वयं दलित परिवार का होने से दलितों की पीड़ा, यातना, दारिद्रय तथा दलितों की अन्य समस्याओं से स्वानुभूतिपरक परिचित है। सुक्खा तथा रमिया चंदन के माता-पिता चमार जाति के होने से प्रस्थापित समाज सामंतवादी तथा पूँजीवादी व्यवस्था के द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक शोषण से प्रताड़ित है। उनका मातापुर गाँव में एक छप्परनुमा घर है। उनकी कुछ जमीन है जो जमींदार ठाकुर हथिया लेता है। सुक्खा दीनता और अभावग्रस्तता के बावजूद भी उनमें अपनी इकलौती संतान चंदन को उच्च्य शिक्षित वनाने की ललक है। चंदन के माता-पिता स्वयं अभावों, कष्टों को सहकर त्यागमयी जीवन बीताते हुए हर पल चंदन के भविष्य के वारे में चिंतत रहते हैं। वे चंदन को पढ़ा - लिखाकर वड़े ओहदे पर अफसर के रूप में

विराजमान हुआ देखना चाहते हैं। चंदन का पिता सुक्खा कहता है कि - "वस्स किसी तरह उसकी पढ़ाई-लिखाई पूरी हो जाए...।"[23]

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन संघर्षशील युवक है। चंदन की बचपन से ही पढ़ाई में रुचि रहती है। वह आत्मविश्वास और स्वाभिमान इन गुणों से संपन्न है। स्कूल में दलितों के बच्चों को बैठने की व्यवस्था कक्षा के सबसे पीछले बेंच पर थी जहाँ से चंदन को न अध्यापक की बातें सुनाई देती थी न ही बोर्ड पर की लिखावट स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। मातापुर गाँव के बच्चे अपने गाँव से दूसरे गाँव में पढ़ाई के लिए जाते थे। वहाँ मातापुर गाँव के ठाकुर हरनामसिंह की इकलौती संतान रजनी पढ़ाई के लिए आती थी। वह चंदन की कक्षा में ही पढ़ती थी। एक दिन कक्षा में चंदन के फटे कुर्ते पर व्यंग्य करने का यह अपमान रजनी को समस्त मातापुर वासियों का अपमान महसूस होता है। वह चंदन की सहायता हेतु नया कुर्ता लाने के लिए उसे पैसों की मदद करने का प्रयास मानवतावादी विचारों से करती है किन्तु चंदन उसे समझाते हुए कहता है कि "परीक्षा होने दो रिजल्ट बता देगा कि उपहास का पात्र कौन है। तुम देखना रजनी मातापुर का फटे कुर्तेवाला यह गरीब लड़का सबसे अच्छें नंबरों में पास होगा।"[24] चंदन आत्मसम्मान के साथ जीना चाहता था। चंदन अपने माता-पिता के कठोर परिश्रम से परिचित था। वह कहता है कि मेरी पढ़ाई के लिए मेरे माता-पिता दिन-रात मेहनत मजदूरी करते हैं ताकि मैं पढ़कर अपना जीवन सुधार कर उनका सहारा वनूँ। मुझे उनकी आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति करनी है। चंदन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से मन लगाकर पढ़ाई करता है उसका स्वाभिमान और आत्मविश्वास उसे मातापुर से शहर में उच्च्य शिक्षा ग्रहण करने हेतु ले आता है।

चंदन मातापुर से शहर उच्च्य शिक्षा के लिए जाता है, उस समय उसके मन-मस्तिष्क में शहर में स्थित समाज व्यवस्था को लेकर एक विचार आता है कि गाँव तथा शहर के सामाजिक परिवेश में कुछ फर्क होगा, किन्तु उसकी सोच कल्पना वनकर

ही रह जाती है क्योंकि शहर में भी गाँव की तरह अज्ञान, शोषण, जाति-भेद, अंधविश्वास, कानून का आतंक, सेठ-साहुकारों के सूद की निर्मम मार गरीब दलितों की असुरक्षा तथा आर्थिक अभावों की पीड़ा और रोटी, कपड़ा, मकान की कमी आदि के रूप में गंदगी फैली हुई उन्हें देखने को मिलती है।

चंदन शहर में संतनगर के जे.जे. कालोनी में एक दलित मजदूर हरिया की झोपड़ी में रहकर अपनी शिक्षा के साथ-साथ समाज कार्य में रत रहता है। शहर में भी गरीब जनता अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण अंधश्रद्धा की शिकार हुई है, बारिश न होने से अकाल, महामारी से लोग परेशान है। इससे बचने हेतु संतनगर में यज्ञ का आयोजन किया जाता है क्योंकि लोगों की धारणा है कि आकाश के इंद्र देव रूष्ट हुए हैं। इस गलत धारणा के कारण यज्ञ-अनुष्ठान के आयोजन हेतु चंदा इकट्ठा करते हुए लोग चंदन तक पहुँचते हैं। चंदन इसका विरोध करते हुए इन लोगों के अज्ञान तथा अंधविश्वास को दूर करने हेतु कहता है कि - "यह मान्यता गलत है कि यज्ञ करने से भगवान इन्द्र प्रसन्न होंगे और तब वर्षा होगी। वर्षा होगी मानसून के आने से।"[25] चंदन लोगों को कहता है कि "पत्थर के इन देवी-देवताओं या भगवानों की पूजा-अर्चना करने से या उनको भेंट चढ़ाने से कुछ भी होनेवाला नहीं है।"[26] इससे चंदन की नास्तिकता के साथ-साथ लोगों के बीच स्थित अंधविश्वासों प्रवृत्ति पर कठोरा घात करने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

चंदन उन्हें समझाता है कि ऐसे यज्ञ-अनुष्ठानों पर किया गया खर्च जीवन-सुधार के लिए किया जाए। आपके बच्चों का भविष्य बनाने के लिए स्कूल खोले जाए। महिलाओं को सिलाई-बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाए। चंदन सृष्टि में मनुष्य की सत्ता को ही सर्वोपरी मानता है। उन्हें समझाता है कि प्राचीन काल से धर्मगुरु तथा पंडित लोग दलित समाज को दिव्य-शक्तियों से भयभीत रखकर धर्म के नाम पर शोषण करते आ रहे हैं। वे लोग अपनी जीविका चलाने के हेतु अज्ञानी लोगों को अपने शोषण का

शिकार बनाते हैं। तुम लोग ईश्वर को मानते हो, उसकी पूजा आराधना करते हो, फिर भी वह तुम लोगों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, शोषण, अपमान को कैसे देखता रहता है। चंदन लोगों से कहता है - "दुनिया में आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म, भगवान या इस तरह की किसी सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं है।"[27] अत: चंदन दलितों में स्थित अंधश्रद्धा को वैज्ञानिक कसौटी पर परख कर उनमें वैचारिक जागृति करता है। वह दलित समाज परिवर्तन की मुहिम संत नगर के जे.जे. कालोनी से शुरू करता है।

चंदन अपनी पढ़ाई के दौरान अपने कॉलेज के दलित युवाओं को संगठित करता है। उन्हें सामाजिक दायित्वों की जिम्मेदारी का एहसास दिलाता है। उन्हें जीवन में शिक्षा के बल पर दलित समाज के अन्याय, शोषण, उपेक्षा के विरूद्ध प्रबल संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है। चंदन अपने शिक्षित दलित मित्रों से कहता है कि - "हमारा कर्तव्य बनता है कि हम चाहे जिस क्षेत्र में जाए लेकिन अपने लोगों का ध्यान रखे, उनकी मदद करें।"[28] चंदन अपनी शिक्षा का उपयोग दलित समाज की हीन-दीन दशा के उत्थान तथा विकास हेतु करना चाहता है वह कहता है कि - "मैं उन पीड़ित, शोषित और उपेक्षित लोगों को ऊपर उठाने के लिए काम करूंगा जो कीड़े-मकोड़ों की तरह जीते हैं। जो समाज जिनके साथ पशुवत व्यवहार करता है, उनको पास नहीं बिठाता और उनसे घृणा करता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी के कर्ज ने जिनकी कमरतोड़ दी है और कर्ज को चुकाने के लिए जो बधुआ बनकर जीने को विवश होते है, ठाकुर जमींदारों की मार सहते है, हर तरह के अन्याय शोषण और उत्पीड़न के शिकार होते है उन लोगों को शिक्षित करूंगा।"[29] यहाँ दलित समाज के प्रति चंदन की प्रतिबद्धता दिखाई देती है।

चंदन प्रस्थापित व्यवस्था तथा सत्ता के विरूद्ध संघर्ष करके अपने समाज को सत्ता में भी लाने के लिए प्रयत्नरत रहता है। वह सार्थक संघर्ष करने के लिए शिक्षा एवं संगठन की ताकत को महत्वपूर्ण मानता है। चंदन दलितों के बच्चों को पढ़ाकर शिक्षित बनाने के लिए स्वयं का स्कूल निकालता है। अज्ञान लोगों के जीवन में शिक्षा की

महत्ता को उजागर करते हुए वह कहता है कि - "जीवन की लड़ाईयों को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है। शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है।"[30] चंदन लोगों को समझाता है कि आप लोगों का यह शोषण, दारिद्रय आप जिसे नियति समझ बैठे हैं वह आपकी धारणा गलत है। इसके पीछे का कारण आपका अज्ञान है। समाज में आपको समानता का दर्जा नहीं, आपकी कोई हैसियत नहीं क्योंकि समाज व्यवस्था धर्मद्वारा प्रेरित और संचालित है, जिसमें हमारे शोषण को बढ़ावा दिया है। तथा हमारी सामाजिक स्थिति धार्मिक आदेशों पर आधारित तय की गई है। धर्मग्रंथ भी हमारे शोषण के साधन बनाये हैं। इन सब बातों को जानने के लिए शिक्षित होना जरूरी है।

चंदन दलित नारी शोषण के खिलाफ विद्रोह करने के लिए शोषित नारी कमला से कहता है कि - "आप हिम्मत से काम ले कमला जी। इन अत्याचारियों का नाश जरूर होगा एक दिन! मैं आपके साथ हूँ। कभी-भी कोई परेशानी हो मुझसे कहिएगा। मेरा पूरा सहयोग मिलेगा आपको।"[31] अत: चंदन इन दलितों की प्रेरणा बनता है। उनमें वैचारिक जागृति करके आत्मविश्वास पैदा करने का प्रयास करता है।

चंदन ने समाज कार्य करते-करते अभाव और कष्टों को पार करते-करते एम्.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और पीएच्.डी. के लिए पंजीकरण कराया किन्तु आर्थिक अभावों के कारण चंदन की पढ़ाई में बाधा निर्माण होने की संभावना आती है तो हरिया जो चंदन के हर संघर्ष का साथी है, अपनी आदतों का त्याग करके स्वयं की कमाई से चंदन की मदद करता है, जिससे चंदन पुनश्च पढ़ाई में जुडकर सामाजिक कार्यों में रत रहता है।

एक दिन हरिया अपनी जीवन की व्यथा चंदन को बयान करता है। हरिया के मालिक ने और पुलिस ने उस पर अन्याय किया था। उसके कलंकित पुत्री को न्याय नहीं मिला था। हरिया मालिक का खून करता है। उसे जेल होती है किन्तु उसके खिलाफ

कोई ठोस सबूत अदालत को न मिलने के कारण वह जल्दी ही छूट जाता है। पिता को जेल होते ही पुत्री गाँव छोडकर भागी थी इस तरह की व्यथा को चंदन ने कमला के मुख से सुना था। चंदन कमला तथा हरिया अभागें पिता-पुत्री को मिलाता है। जीवन की क्रूर यंत्रणाओं के शिकार बने तथा अपनी त्रासदी को झेलकर वर्षों बाद मिले पिता और पुत्री एक-दूसरे से लिपटकर खूब रोते हैं जिसे देखकर चंदन को सुख और संतोष का अनुभव होता है। हरिया उसी दिन कमला और उसके बेटे को घर ले आता है। चंदन को एक ओर से खुशी होती हैं, परंतु दूसरी ओर से वह यह भी सोचता है कि अब उसे रहने के लिए दूसरी जगह ढूँढनी पड़ेगी। चंदन ऐसी किसी भी संभावना को उभारना नहीं चाहता कि भविष्य में समाज हरिया की बेटी को लेकर कुछ मिथ्या और अशोभनीय बातें न कहें। लेकिन कमला कि श्रद्धा चंदन बाबू के प्रति साक्षात देवता के समान है। उनके चरणों की धूली भी उसे पूजनीय है। चंदन स्वयं से ज्यादा दूसरों की इज्जत की चिंता करते हुए कहता है कि अब तो आप और कमला के लिए ही घर में जगह कम पड़ेगी। किन्तु हरिया चंदन से कहता है कि "जगह तो दिल के अंदर होनी चाहिए बेटा। यदि दिल में जगह हो तो घर में जगह की क्या कमी?"[32] यहाँ हरिया के दिल की उदारता का परिचय मिलता है।

हरिया चंदन को अपने बेटे की तरह अपनत्व की भावना से पुनश्च घर में रहने के लिए आग्रह करता है, जिससे चंदन अपने उद्देश्य में दिन-व-दिन सफलता की ओर बढ़ता रहता है। समाज में जो लोग स्वयं शिक्षित हुए है वे दूसरों को पढ़ाना-लिखाना शुरू करते हैं। धीरे-धीरे अशिक्षा और अज्ञान के साए में जीने वाले दलितों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार शुरू होता है।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार से दलित लोगों की सोच में व्यापकता आकर हमेशा रोटी की चिंता में रहनेवाले लोगों के चिंतन में बदलाव आता है। शोषण और अन्याय, अत्याचार का निर्मूलन के बारे में वे सोचने लगते है। परिणाम स्वरूप दलित समाज में

15519

मानवतावादी मूल्य, समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय इन विचारों की जागृति जोर पकड़ने लगती है। धीरे-धीरे चंदन का स्कूल दलित, शोषित लोगों के लिए सामाजिक गतिविधियों का केंद्र बनता है। चंदन का सामाजिक बदलाव का यह जन आंदोलन शहर की गली से लेकर गाँव-गाँव में फैल जाता है। लोग इस आंदोलन में सहभाग लेकर स्वतंत्रता की सांस लेने के लिए आतुर होते हैं। यहाँ शिक्षा के माध्यम से दलितों में चेतना जागृति करने का काम चंदन करना चाहता है।

चंदन का दलित जन-जागृती आंदोलन व्यापक रूप धारण करता है। इसे सुनियोजित करने के लिए चंदन दिन-रात कार्यरत रहता है। वह 'आराम' यह शब्द अपने जीवन से निकाल कर समाज कार्य में रत रहता है। हरिया चंदन को आराम की बात कहता है तो चंदन कहता है कि "हमारा समाज न केवल सोया हुआ है, बल्कि वह जंजीरों में जकड़ा हुआ भी है। शोषण और अत्याचार की मार से पीड़ित और जर्जर यह समाज कहीं हमेशा के लिए सोता ही न रह जाए इसलिए उसे जगाना जरूरी है। सोए हुए समाज को जगाने के लिए तथा जागने तक उसकी रक्षा और पहरेदारी करने के लिए किसी-न-किसी को तो अपनी नींद और आराम का त्याग करना ही पड़ेगा ना।"[33] चंदन की इन बातों में समाजहित के लिए उभरे हुए दर्द सुनकर हरिया की आँखों में आँसू आते हैं, वह कहता है कि - "तुम सचमुच चंदन हो अपने कुल-खानदान के भी और समाज के भी। तुमने अपनी खुशबू से इस समाज को महका दिया है।"[34] चंदन स्वयं घीस जाता है और दूसरे के दर्द को शितलता देता है। चंदन नाम की इसी में सार्थकता है।

चंदन की सामाजिक क्रांति की विचारधारा सामाजिक परिवेश को बदलने में कामयाब होती है। भ्रम और भ्रांति के शिकार बने दलित लोग यथार्थ को जानना शुरू कर देते हैं। जन्म के आधार पर व्यक्ति को श्रेष्ठ या कनिष्ठ मानने की भावना का लोप होकर गुण-कर्म तथा योग्यता के आधार पर ही मनुष्य की श्रेष्ठता को माना जाने लगा। चंदन के अथक परिश्रमों तथा प्रामाणिक प्रयासों का यह सुखद परिणाम था। चंदन के

इस सामाजिक जागृति के परिणाम स्वरूप चंदन द्वारा दलित समाज में चेतना जागृति करने के उपरांत धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों के जरिए शोषण करनेवाले पण्ड़े-पुरोहित के परंपरागत व्यवसाय को झटका लगता है। दलित समाज चंदन के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर दलित लोगों ने सवर्णों की सामाजिक श्रेष्ठता को नकारते हुए पूंजीवादी और सामंतवादियों का भी खुलकर विरोध करना शुरू कर दिया।

आजादी के बाद भी गाँवों में सेठ-साहुकारों द्वारा गरीब मजदूर किसानों का निरंतर शोषण होता जा रहा है। सन् **1975** में आपत्कालीन परिस्थिति की घोषणा के बाद तत्कालीन पंतप्रधान श्रीमती इंदिरा गांधी ने साहुकारी प्रथा को कानून से वंद कर दिया फिर भी आज कानून के बावजूद भी साहुकारी बढ़ती जा रही है। सेठ-साहुकारों द्वारा गरीब जनता का शोषण होता जा रहा है। इसी शोषण को रोकने का प्रयत्न प्रस्तुत उपन्यास का नायक चंदन करता है। चंदन दलितों को सेठ-साहुकारों के सूद की निर्मम मार से बचाने के हेतु गाँव में सहकारी समिति की स्थापना करता है। इससे दलित मजदूर लोग आत्मनिर्भर बनकर अपनी आर्थिक कठिनाइयों में मदद लेते हैं। इससे गाँव में पैसा कमानेवाले साहुकार लोगों का व्यवसाय बंद होता है। चंदन मजदूर लोगों को उनके श्रम के मूल्य से भी अवगत कराता है। जिससे मजदूर लोग जमींदारों से अपने मजदूरी के उचित मूल्य की माँग करते है। किन्तु जमीनदारों द्वारा उचित मजदूरी नकारते ही ये मजदूर लोग गाँव छोड़कर शहर के कारखानों में काम हेतु निकलते हैं, जिससे जमींदारों को श्रम का मूल्य और मजदूरों का महत्त्व समझता हैं।

आज अन्याय, अत्याचार, शोषण, सामाजिक न्याय हेतु अनेक आंदोलनों का निर्माण होता जा रहा है। प्रजासत्ताक भारत में अपनी न्याय माँगों की परिपूर्ति के लिए आंदोलन एक प्रभावी अस्त्र रहा है। इसी का उपयोग म.गांधीजी ने आजादी की प्राप्ति के लिए किया था। आज आंदोलनों का विविधमुखी विस्तार होता जा रहा है। ये आंदोलन समाजाभिमुख बनकर सरकारी प्रशासन को हिलाने का काम भी करते हैं। चंदन इसी

आंदोलन का सहारा लेकर सामाजिक न्याय भी मांग करता है। चंदन के आंदोलन के कई उद्देश्य है जैसे सामाजिक समता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, महिला शिक्षा तथा उत्थान और सांस्कृतिक पुनरूत्थान आदि। चंदन के आंदोलन की हवा उसके गाँव तक पहुँचती है, जिससे मातापुर गाँव के ठाकुर हरनामसिंह, काणापंडित, लाला दुर्गादास आदि में परिवर्तनवादी विचारधारा की जड़े जमने लगती है। चंदन जब मातापुर गाँव में आता है तब उसे यह अनुभव होता है कि गाँव के सामाजिक परिवेश में वदलाव आकर सभी लोग भाईचारे से एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते है। ठाकुर साहव की वेटी रजनी जिसकी हर इच्छा और सुख के लिए ठाकुर सदैव सब कुछ करने के लिए तत्पर रहते थे, वह भी उनके शोषक वृत्ति की उपेक्षा कर रही थी। इससे वे दु:खी होकर अपने को वदलने का विचार करने लगते हैं। यहाँ बेटी के प्रेम के खातीर उसके वदलते हुए विचारों के साथ ठाकुर अपने विचारों में परिवर्तन करते हैं।

मातापुर के सामाजिक वदलाव को देखकर ठाकुर साहव सोचते हैं कि जिन लोगों का उन्होंने शोषण किया है, जिनको दवाया, कुचला दिया है उनके समर्थ होने पर वे लोग जरूर उनकी घृणा करेंगे और अपने साथ हुए अन्याय और अपमान का वदला लेंगे। किन्तु उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किसी ने भी उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया। यहाँ जयप्रकाश जी गांधीवादी विचारधारा को अपनाकर दुश्मन को दोस्त मानकर उनके दुष्ट विचारों में परिवर्तन करना चाहते हैं। प्रारंभ में जरूर कुछ लोग ठाकुर हरनामसिंह के प्रति उपेक्षा का भाव जताते है किन्तु जब चंदन गाँव के दलित समाज के लोगों से कहता है कि "हम व्यवस्था के विरोधी है, व्यक्ति के नहीं।"[35] अत: चंदन के इन विचारों को आत्मसात कर लोग ठाकुर हरनामसिंह के साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार करने लगते हैं। स्पष्ट है कि दलित जन-जागृति में चंदन व्यवस्था का विरोध करता है, व्यक्ति का नहीं। इससे दलित-सवर्ण के बीच संघर्ष उभारना नहीं चाहता हैं।

अत: जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन सामाजिक क्रांति का प्रतीक बनता है। वह गाँव और शहर में घूमकर समाज में स्थित अन्याय और असमानता को मिटाकर सवर्ण-दलित, छूत-अछूत, अमीर-गरीब और मालिक-मजदूर सबको एक समान धरातल पर लाने तथा समाज में खुशहाली और भाई चारा बढ़ाने के कार्य में सफल होता है। चंदन दलित समाज के अज्ञान और पिछड़ेपन को दूर करके निराशा और अंधकार के साए में जी रहें समाज में आशा, आत्मविश्वास स्वाभिमान जागृत करता है। चंदन दलित समाज को भारतीय संविधान द्वारा प्रदान मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक करके उनमें वैचारिक जागृति के साथ-साथ सामाजिक समता की क्रांति के बीज बोता है। यहाँ चंदन के विचारों पर मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव भी दिखाई देता है। वह सामाजिक विषमता के प्रति क्रांतिकारी विचारधारा जरूर रखता है परंतु इसमें संघर्ष को स्थान नहीं देना चाहता है।

2.2.2.2 गौण कथा :

प्रस्तुत उपन्यास में कई गौण कथाएँ आयी हैं, जो मुख्य कथा को गतिशील बनाती हैं। 'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन के माता-पिता रमिया तथा सुक्खा की गौण कथा यहाँ यथार्थ सामाजिक स्थिति को दर्शाती है। वे मातापुर गाँव में रहते हैं। सुक्खा एक गरीब दलित मजदूर किसान है। वह जाति से चमार होने के कारण सामाजिक तथा आर्थिक शोषण का शिकार बना हुआ है। उसकी उम्र अभी ज्यादा नहीं थी किन्तु कठोर परिश्रम और दमे की बीमारी ने समय से पहले ही उसे बूढ़ा बना दिया था। सुक्खा की पत्नी रमिया जो अपने पति के लिए हर समय त्याग और समर्पण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। सुक्खा तथा रमिया दोनों स्वयं अनपढ़ होकर भी अपने इकलौते संतान चंदन को उच्च्य शिक्षा हेतु शहर भेजते हैं। ताकि चंदन पढ़-लिख कर सदियों की गुलामी की जंजीरों से मुक्त होकर स्वाभिमानी जीवन जीए। सुक्खा की मान्यता है कि व्यक्ति जन्म से बढ़ा न होकर गुण-कर्म एवं योग्यता के बलवूते पर वड़ा

होता है।

इस उपन्यास में धार्मिक शोषण से संबंधित काणा पंडित की कथा भी गौण कथा में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाती हैं। मातापुर गाँव का काणापंडित जो अज्ञानी लोगों का धार्मिकता के नाम पर शोषण करता है। वह विद्या तो नहीं जानता किन्तु बुद्धि के बलवुते पर वह सव के हाथ देखकर लोगों को भविष्य बता कर सवकी झाड़-फूंक भी करता है। इस पाखंडता के बदले खूब दान-दक्षिणा प्राप्त करता है। जिससे उसकी जीवका मजें में चलती हैं। धर्म के नाम पर ये सवर्ण मानसिकता के वर्वर प्रतिनिधी काणेपंडित और ठाकुर हरनामसिंह सुक्खा के बेटे चंदन की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करते है। दलितों का पढ़ना - लिखना, उनकी शिक्षा-दीक्षा गाँव के गंजी हुई मानसिकता के सवर्णो को अच्छी नहीं लगती। उनकी धारणा यह रहती है कि यदि दलित मजदूरों के बेटे-बेटियाँ शिक्षा-दीक्षा के वहाने शहर जाने लगे तो हमारी खेती पर काम कौन करेगा। यदि वे बड़े अफसर बने तो हमारा सामाजिक स्तर धोखे में आयेगा। इस धारणा के परिणाम स्वरूप ये सवर्ण हमेशा दलितों के बेटे-बेटियों की पढाई में रोडे अटकाने का कम करते हैं। चंदन भी इसका अपवाद नहीं रहा है। वे कहते हैं कि आज तक मातापुर गाँव से ब्राह्मण, ठाकुर, सेठ, साहुकारों के घर से किसी का भी लड़का पढ़ाई के लिए शहर नहीं गया है। किन्तु एक दलित चमार का लड़का शहर पढ़ने गया है। काणा पंडित सुक्खा से कहता है कि "तू कितना भी वड़ा हो जा सुक्खा, लेकिन धर्मशास्त्रों से वड़ा नहीं हो सकता। तू अपमान करता है धर्मशास्त्रों का वेद-वेदांगों का नास्तिक।"[36] यहाँ सवर्णो की सड़ी मानसिकता के दर्शन होते हैं। ये लोग अपने से किसी को ऊँचा नहीं मानते हैं।

सुक्खा चमार को यथास्थिति अपने पुत्र चंदन को वापस गाँव बुलाने के लिए मजबूर करने का प्रयास करते हैं। सुक्खा की नाकाबंदी की जाती हैं। लगान के नाम पर उसका खेत हथिया लिया जाता है। ठाकुर हरनामसिंह को अपनी वात का न मानना

अपमान जनक लगता है। उसी दिन ठाकुर साहब ने सवर्णों की पंचायत बुलायी और फैसला हुआ कि न तो सुक्खा को खेती में काम दिया जाए और उसे कोई मदद करें। सुक्खा पर सामाजिक बहिष्कार डाला जाता है। दलितों को पीडा पहुँचाने का यह कारगर उपाय सवर्ण लोग तलाशते हैं।

ठाकुर हरनामसिंह और काणा पंडित ने सोचा था कि जीवन के सब रास्ते बंद हो जाने पर ही सुक्खा उनके सामने गिड़गिड़ाएगा, उसकी हेकड़ी निकल जाएगी और अपने बेटे को वह शहर से वापस बुला लेगा। लेकिन जीवन भर घृणा और उपेक्षा, अपमान का शिकार रहा सुक्खा में स्वाभिमान जाग उठता है। सुक्खा अपनी छोटीशी खेती में मेहनत से कमाना शुरू करता हैं। वह सोचता है कि ठाकुर, जमींदारों ने रास्ते बंद किए तो क्या, अपनी जिंदगी के रास्ते तो बंद नहीं हो जाते हैं। इस विचारधारा के बल पर वह जीवनयापन करता रहा किन्तु आपत्तियों ने साथ नहीं छोड़ा पहले भैंस मरी और बाद में लगान न देने के कारण खेत से बेदखली किया गया, लाला दुर्गादास ने गिरवीं घर पर कब्जा कर लिया, जिससे सुक्खा को मातापुर गाँव छोड़कर नजदीक के कस्बे में जाकर रहना पड़ा। इन सारे अन्याय, अत्याचार को सहकर भी वह संघर्षरत रहा। अपने बेटे की पढ़ाई में बाधा निर्माण न हो इसलिए चंदन को इन बातों का कोई एहसास नहीं होने दिया। सुक्खा को रजनी से पता चलता है कि चंदन शहर में रहकर अपनी शिक्षा के साथ-साथ दलित समाज के लागों को शोषण से मुक्त करने के लिए शिक्षा, संगठन, संघर्ष के मूल्यों का महत्त्व उन्हें समझाकर उनमें समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय इन मौलिक अधिकारों के प्रति जागृति कर रहा है। चंदन सामाजिक कार्यो में रत रहकर दलितों का आत्मविश्वास तथा प्रेरणास्त्रोत बनकर सामाजिक क्रांति का प्रतीक बना है। सुक्खा चंदन के इन कार्यो से परिचित होकर कहता है कि "हमारी आशाओं का केन्द्र, हमारे जीवन का आधार चंदन ही है हमारा सब कुछ। यदि समाज को जरूरत है तो अब से चंदन को समाज के लिए छोड़ता हूँ मैं।"[37] सुक्खा अनपढ़ होकर भी शिक्षा की महत्ता से परिचित

है। वह स्वाभिमानी प्रेरणादायी सामाजिक दायित्व में तत्पर, तथा ईमानदार, परिश्रमी व्यक्ति हैं। दलित समाज के हित के लिए वह अपने पुत्र को अपने स्वार्थ के सिकंजे में अटकाना नहीं चाहता हैं। एक निस्वार्थी पिता के रूप में लेखक ने सुक्खा को चित्रित किया है।

सवर्णो की खेतीबाड़ी में काम करनेवाले दलित मजदूरों का जमींदार हमेशा शोषण करते हैं। इसी जमींदारी शोषण का शिकार हरिया हैं। हरिया उच्चवर्गीय समाज के लोगों से सामाजिक अन्याय तथा शोषण का शिकार बना हुआ है। वह एक दलित मजदूर है। हरिया चंदन के साथ पुत्रवत स्नेह से बर्ताव करता है। चंदन हरिया के घर रहने के लिए आने से उसके बुढ़े और लुंज-पुंज शरीर में नई शक्ति, नई स्फूर्ति का संचार होता है। हरिया चंदन के सामाजिक कार्यो से प्रभावित होकर उसके हर संघर्ष का साथी तथा लड़ाई का सिपाही बनता है। वह चंदन की आर्थिक मदद भी करता है। उसे पढ़ाई के लिए भी प्रेरित करता है और कहता है कि "पढ़ो बेटा पढ़ो पूरी मेहनत से पढ़ो! मन लगाकर पढ़ो, ऊँची तामील पाओं और बड़े ओहदे तक पहुँचों।"[38] अत: हरिया एक सहयोगी, परिश्रमी, प्रेरणादायी, पात्र के रूप में चंदन की सहायता करता है। चंदन की कार्यशैली ने दलित मजदूरों में भी कैसे जान भर दी है, इसका सबूत हमें हरिया के माध्यम से मिलता है।

सवर्ण समाज केवल दलितों का आर्थिक, शारीरिक, मानसिक शोषण ही नहीं करता है, बल्कि दलित औरतों की अस्मत भी लूटने में हिचकिचाता नहीं है। इसके खिलाफ आवाज उठानेवालों की आवाजों को दबाता है। कमला नामक एक दलित औरत इस पीडा का शिकार बनी हुई है। कमला एक दलित शोषित नारी है, जो बलात्कार के पश्चात भी जीवित रहकर उस पर हुए अन्याय के प्रतिशोध हेतु चंदन के दलित आंदोलन में सम्मिलित होती है। एक दिन चंदन जनसभा को संबोधित करके मंच से उतर रहा था कि अचानक समाज विरोधी और दूषित मानसिकता वाले व्यक्ति ने चंदन को जान से

मारने के उद्देश्य से उसके सिर पर लाठी से प्रहार किया। चंदन के सिर पर लाठी को पडते देख कमला ने चीते की तरह एक ही झटके से चंदन को धक्का देकर हटा दिया चंदन तो बच गया लेकिन लाठी सीधी कमला के सिर पर आकर पड़ी और कमला ढ़ेर हो चुकी। हालांकि हमलावार को तुरंत पकडकर पुलिस के हवाले कर दिया गया और समाज के सभी वर्गो के लागों ने इस घटना की निंदा की। कमला विद्रोही, त्यागी, परिश्रमी, प्रेरणादायी तथा सामाजिक दायित्वबोध से तत्पर नारी है जो अन्याय,अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करती हुई अपना जीवन समाज के लिए समर्पित करती है। एक दलित नारी की चेतना के उभार में चंदन की कार्यपद्धति बड़ा योगदान निभाती है।

मातापुर गाँव के ठाकुर हरनाम सिंह सबसे बड़ी हस्ती हैं। इलाके भर में उनका दबदबा हैं। परंपरा से उनकी जमींदारी है। उनकी इतनी बड़ी मिल्कियत थी कि एक जान और सौ आफत। पुलिस-दारोगा, तहसीलदार, कलेक्टर छोटे- से लेकर बड़े तक सभी सरकारी अफसर उनके पहचान के रहें हैं। अर्थात उनकी अपनी एक हैसियत है। उनके जीवन में किसी-भी चीज की कमी नहीं रही हैं। किन्तु इन सभी वातों के बावजूद भी उनकी एक व्यथा थी। असमय पत्नी की मृत्यु से एक वेटे की आशा पुरी न हो सकी थी। उनकी इकलौती बेटी रजनी एकमात्र उनके जीवन का आधार है। उनके पश्चात उनकी इतनी बड़ी जाग़ीर की वारिस तथा वंश का चिराग रजनी ही थी।

रजनी एक सुशिक्षित तथा परिवर्तनवादी विचारधारा की युवती है। वह समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय इन मानवतावादी मूल्यों की पक्षधर है। रजनी चंदन की सहपाठी मित्र थी। चंदन के लिए उसके मन में सहानुभूति है। वह चंदन को हर समय सहयोग देने की कोशिश करती हैं। वह चंदन को उच्च्य शिक्षा तथा सामाजिक कार्यो के लिए प्रेरणा देती है। रजनी उसके माता-पिता की देखभाल करती है। वह दलित, शोषित समाज के साथ सहानुभूतिशील व्यवहार करती है। उसके पिता ठाकुर हरनामसिंह चंदन के पढ़ाई में बाधा निर्माण करते है क्योंकि "यदि ये सब लोग पढ़ा-लिखा कर ऊँचे ओहदे

तक पहुँचने लगेंगे तो हमारी श्रेष्ठता कहाँ रह जाएंगी। यदि ये सब स्वावलंबन और स्वाभिमान का जीवन जीने लगेंगे तो फिर हमारा वर्चस्व किस पर रहेंगा।"[39] अत: ठाकुर अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए दलित समाज का शोषण करता है वे कहते हैं कि हमारी श्रेष्ठता अबाधित रहें, हमारी अस्मिता इसी में है। ठाकुर साहब ने सुक्खा के साथ जो सलूक किया उसके प्रति रजनी के मन में क्षोभ और आक्रोश रहता है। वह अपने पिता को समझाने का प्रयास करते हुए कहती है कि "संविधान के अनुसार देश के प्रत्येक नागरिक को सम्मान और स्वाभिमान पूर्वक जीने का हक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वेच्छा नुसार व्यवस्था चुनने और जीवन की दिशा निर्धारित करने की स्वतंत्रता है। यदि चंदन पढ़-लिखकर काबिल बनना चाहता है, तो यह उसका संवैधानिक हक है इस पर किसी को एतराज क्यों होना चाहिए।"[40] लगता है कि सवर्णों की शिक्षित पीढ़ी जातियता की अपनी पुरानी ऐंठन छोड़कर सामाजिक समन्वय की बातें सोचती जा रही है। जमींदार हरनाम सिंह की बेटी रजनी इसकी सबूत है।

रजनी अपने पिता की शोषक वृत्ति तथा स्वार्थी प्रवृत्ति की विचारधारा में परिवर्तन करने का प्रयास करती हैं तथा उन्हें समझाती है कि समाज में बदलाव आ रहा है, जिन लोगों का आप ने शोषण किया है, ये लोग एक-न-एक दिन जागृत होकर अपनी गुलामी के जंजीरों को तोड़ फेंकेंगे। और आपने उनके साथ जो व्यवहार किया है कल वे लोग आपके साथ तथा अपने आनेवाली अगले पीढ़ी से न करें। आप अपने विचारों में बदल लाकर उन्हें भी मानव की तरह जीने दो। वे भी हमारी तरह जीव है। रजनी के इन मानवता तथा समतावादी विचारों से ठाकुर हरनामसिंह प्रभावित होते हैं। परिणाम स्वरूप स्वयं रजनी की विचारधारा को स्वीकारतें हैं। वे अपनी बेटी रजनी की बातों में आकर भयावह भविष्य की कल्पना करके स्वयं में परिवर्तन करते हैं। उन्हें अपने किये पर घृणा और ग्लानी होने लगती है। वे इस घुटन भरी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए खुदखुशी करने का प्रयास भी करते हैं किन्तु सुक्खा उन्हें बचाकर अपने गले

लगाकर उनको ढ़ाढस बधाता है। ठाकुर साहब सोचते है कि सुक्खा इतना अन्याय सहने के पश्चात भी मुझसे सहृदयता का व्यवहार करता है। उन्हें सुक्खा के समक्ष अपना समस्त अस्तित्व बौना लगता है। यहाँ परंपरा से जमींदारों का अन्याय, अत्याचार वर्दाश्त करनेवाला सुक्खा को लेखक ने गांधीवादी विचारों का वाहक वनाया है।

ठाकुर हरनामसिंह अगले ही दिन गाँव में पंचायत वुलाकर अपने गुजारे लायक थोड़ी-सी जमीन रखकर गाँव के सभी गरीब और खेतीहीन लोगों को वाँट देते हैं। और कुछ ही दिनों में अपनी हवेली को त्यागकर एक छोटे से मकान में रहने लगते हैं। वे अपनी खेती का काम स्वयं करते हैं गाँव के सभी लोगों के साथ भाईचारे का नाता जुड़ा कर सामान्य जीवन वीताने लगते हैं। अत: वर्तमान समय में भी उक्त विचारधारा प्रेरणादायी है। ठाकुर हरनामसिंह का यह परिवर्तन गांधीवादी विचारधारा की उपलव्धि लगती है।

कमला की मृत्यु पश्चात रजनी चंदन से कहती है कि समानता और सामाजिक न्याय की ज्योति तुमने जलायी है जिसका दूर-दूर तक उसका आलोक पहुँचा है। दलित समाज के जीवन में परिवर्तन का प्रकाश फैल गया है। हालांकि सदियों से चली आ रही व्यवस्था को एक दिन में महिने में साल में बदला नहीं जा सकता। संपूर्ण बदलाव के लिए काफी समय की आवश्यकता है। तुम्हारे अथक परिश्रमों के प्रयासों से वदलाव की प्रक्रिया शुरू हुई है और दिन-प्रतिदिन यह प्रक्रिया तेज होती जा रहीं हैं। और समाज में अपने उत्थान और विकास के प्रति चेतना आ रही हैं। समाज के दूसरे तवकों के लोग भी यह बात अच्छी तरह समझ चुके है कि दलितों को समानता और भाईचारे का दर्जा देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। यहाँ तुम अपने दायित्वों को अंजाम दे चुके हो चंदन, और तुम्हारी पढ़ाई भी पूरी हो गई है। अव तुम्हें अपने माता-पिता तथा स्वयं की ओर ध्यान देना चाहिए और अव मातापुर चलो। उस समय कमला के वच्चे का प्रश्न उन दोनों के समक्ष उभरता है। रजनी कहती है कि... कमला के वच्चे को भी अपने साथ ले

चलेंगे हम। पिता का प्यार तुम देना और माँ का प्यार मैं दूंगी उसे। अनाथ नहीं रहेगा वह।"[41] दोनों एक-दूसरे की भावना को समझ गए थे। लेखक ने यहाँ सवर्ण-दलितों को भावना के स्तर पर एक स्तर पर लाने का प्रभावी काम किया है।

2.2.2.3 सवर्ण - दलित संघर्ष की स्थिति :

'छप्पर' उपन्यास में एक गरीब दलित मजदूर किसान की संतान चंदन है। चंदन उपन्यास का नायक है। वह मातापुर गाँव से उच्च शिक्षा के लिए शहर चला जाता है। गांव के सवर्ण जमींदार को यह बात अच्छी नहीं लगी। वह चंदन को शहर से वापस गाँव बुलाने के लिए उसके पिता सुक्खा पर दबाव लाते हैं किन्तु सुक्खा चंदन को उच्च शिक्षित बनाकर बड़ा अफसर बनाने का सपना देखता है। इसलिए सुक्खा जमींदार ठाकुर हरनामसिंह को विनयतापूर्वक कहता है "आप माई-बाप हैं मालिक! आपका दिया खाते हैं। आपका गुलाम हर समय आपकी तावेदारी में हाजिर हैं। पर वेटा नहीं माना जिद् कर वैठा आगे पढ़ने को और शहर चला गया हैं।"[42] यहाँ दलितों की मजवूरी का पता चलता है।

ठाकुर हरनामसिंह की बात को सुक्खा को टालते हुए सारी वातें वह वेटे पर छोड रहा है, यह सुक्खा की साजिश को पहचानते ही उनका खून खौल उठता है फिर भी गुस्से पर कावू पाकर सुक्खा को समझाने के स्वर में कहते है-"अपना घर और अपनी धरती छोड़कर भी कोई कहीं जाता है भला और तुम्हारा बेटा चला है, अपना घर और गाँव छोड़कर हमें भी वहुत दिन से एक ईमानदार और पढ़े-लिखे आदमी की जरूरत थी इस सवकी देखभाल और हिसाब-किताब के लिए। तुम्हारे वेटे से ज्यादा विश्वासपात्र आदमी और कौन मिल सकता है हमें। तुम उसे वापस बुला लो सव दिक्कतें दूर हो जाएगी तुम्हारी।"[43] ठाकुर हरनामसिंह चंदन को अपने यहां नौकरी पर रखकर उसे गुलाम बनाना चाहता है। वह सुक्खा को धमकाता भी है किन्तु सुक्खा को उनकी इस स्वार्थी प्रवृत्ति को समझने में देर नहीं लगती। वह ठाकुर साहव की इस चाल को समझते

हुए कहता है कि "तुम्हारी चिकनी - चुपड़ी बातों में आकर अपने बेटे को तुम्हारी गुलामी नहीं करने दूंगा मैं। तुम लोग मक्कार हो धोखेबाज हो।"[44] यहाँ एक गरीव मजदूर सुक्खा में निर्माण हुई चेतना जागृति के दर्शन होते हैं।

ठाकुर हरनामसिंह की बात सुक्खा नहीं मानता इसलिए सवर्ण लोग पंचायत बुलाकर उसके खिलाफ अन्यायकारक फैसला करते है कि - "सुक्खा को खेत-क्यार में घुसने न दिया जाये न उसे किसी डौले चकरोड़ से घास खोदने दी जाये और न उसे लाई-पताई या मजदूरी के लिए बुलाया जाये।"[45] सुक्खा को बहिष्कृत किया जाता है।

सुक्खा अब हृदय से फैसला करता है कि चंदन को किसी भी कीमत पर वापस गाँव नहीं बुलायेंगा। जमीदारों एवं पंडितों के दवाव में नहीं आएगा। सुक्खा स्वाभिमानी दलित किसान हैं। वह इस अन्याय का डटकर विरोध करना चाहता है। सुक्खा कहता है "मैं मर जाऊंगा भूखा प्राण तज दूंगा। सब कुछ वर्दाश्त कर लूंगा मैं, पर चंदन को इस नर्क में नहीं पड़ने दूंगा कभी, जिस नर्क में मुझे रहना पड़ा है।"[46] अर्थात कहना सही होगा कि सुक्खा ने जीवन भर घृणा, उपेक्षा और अपमान सहा था किन्तु अव उसमें स्वाभिमान जागृत हुआ है। वह सवर्ण मानसिकता के खिलाफ संघर्षरत वनता है। अत: उक्त विवेचन से सवर्ण-दलित संघर्ष की स्थिति का संकेत दृष्टिगोचर है। प्रस्तुत उपन्यास में सवर्ण-दलित के बीच संघर्ष है परंतु यह संघर्ष बोथरा लगता है कारण एक दलित सर्वहारा मजदूर खुले आम ठाकुरों से संघर्ष कर नहीं पाता है, फिर भी सुक्खा में संघर्ष के योग्य चेतना तो जरूर जागृत हो रही है।

2.2.2.4 कथावस्तु का समाज जीवन से जुडाव :

जयप्रकाश कर्दम जी ने 'छप्पर' में दलित समाज जीवन को केंद्र में रखकर प्रस्तुत उपन्यास का सृजन किया है। दलित समाज इस उपन्यास के चिंतन का प्रधान विषय है। इसमें निहित कथ्य दलित, शोषित पीड़ित मानव जीवन के समाज के यथार्थता

का दर्पण हैं। यहाँ लेखक ने भारतीय समाज जीवन में दलित समाज की स्थिति और गति को वाणी देते हुए परंपरागत समाज जीवन के वदलाव की आवश्यकता पर वल दिया है।

इस उपन्यास में सदियों से परंपरागत मान्यताओं से भारतीय समाज व्यवस्था में दलित वर्ग किस प्रकार यातना, प्रताड़ना सहते हुए जीवन संघर्ष करता आ रहा है तथा ग्रामीण क्षेत्र में ठाकुर, जमींदार, सेठ- साहुकार इन पर अन्याय, अत्याचार कैसे करते हैं, इसका यथार्थ रूप में अंकन किया है। इस उपन्यास का नायक चंदन दीन-दलितों के प्रति संवेदनशील ही नहीं बल्कि चिंतित भी हैं। वह उनमें परिवर्तन हेतु कार्यरत भी है। चंदन समाज व्यवस्था में उपेक्षित दलित समाज को शिक्षित संगठित वनाकर अपने अस्मिता के लिए उन्हें संघर्षशील वनाता है। वह सवर्णों से क्रांतिकारी संघर्ष छेड़ने की अपेक्षा गांधीवादी विचारधारा के अनुरूप उनकी सोच में बदलाव लाना चाहता है, उन्हें अपने किये पर पश्चाताप व्यक्त करने की स्थिति का निर्माण करता है।

अत: जयप्रकाश कर्दम जी ने 'छप्पर' उपन्यास कथ्य के मूल में दलित-सवर्ण मानव की विविध प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया है। इसमें दलित समाज जीवन के हर पहलुओं का वड़ी गहराई के साथ अंकन किया है। अर्थात उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस उपन्यास का कथ्य समाज जीवन से जुड़ा हुआ दृष्टिगोचर है। इसमें समाज जीवन के प्रबोधन की पृष्ठभूमि का निर्माण करके पारंपारिक समाज-व्यवस्था पर व्यंग्य किया है

2.2.2.5 उच्च-शिक्षित दलितों की पीड़ा :

शिक्षा व्यक्ति की बौद्धिक योग्यता का द्योतक है। भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक सुधार के कार्य इन शिक्षित व्यक्तियों द्वारा ही हुए हैं।

'छप्पर' उपन्यास का नायक एक दलित मजदूर किसान की संतान है। चंदन उच्चशिक्षित युवक है, जो सामाजिक विषमता की पीड़ा से त्रस्त है। वह अपने शिक्षित मित्रों से कहता है कि "हमें इस वात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी

शिक्षा की सार्थकता और हमारे जीवन का श्रेय इस बात में है कि हमें अपने साथ-साथ अपने समाज के उत्थान और विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिए। सदियों से दासता और गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा है हमारा समाज। खाली पेट, नंगे तन और टूटे - फूटे छान झोपड़ो में बसर करने की विवशता यही रहा है सैकड़ो-हजारों वर्षो से हमारे समाज, का यथार्थ हम लोग पढ़-लिख गए हैं लेकिन हमारा समाज, हमारे नाते- रिश्तेदार सबके सब अभी भी उसी स्थिति में हैं उन सबकी निगाहें हमारी ओर है। यदि उनके उत्थान की ओर हम ही ध्यान नहीं देगें तो कौन देंगा।"[47] यहाँ चंदन उच्चशिक्षित है, वह अपने ज्ञान का उपयोग अपने समाज के उद्धार के लिए करता है, वह अम्बेड़करजी की विचारधारा से प्रभावित होकर दलितों का उत्थान चाहता है।

चंदन सामाजिक क्रांति का प्रतीक वनता है, तथा अपने दलित समाज की व्यथा-कथा को निराशा और अंधकार के साए से निकालकर उनमें आशा तथा विश्वास पैदा करने का अथक प्रयास करता है। इसके लिए वह त्याग तथा समर्पण भी करता है। आज चंदन जैसे उच्च्य शिक्षित दलित अनेक हैं जो सामाजिक विषमता की आग में झुलस रहे है। तेजिंदर के 'उस शहर तक' उपन्यास भी इसी कोटी का है,जिसमें उच्चशिक्षित दलित नायक की सामाजिक विषमता से उत्पन्न छटपटाहट देखने योग्य एवं चिंतनशील है।

निष्कर्षतः प्रस्तुत उपन्यास 'छप्पर' की कथा में एक झुग्गीनुमा छप्पर के नीचे पलनेवाले दलित समाज की कथा-व्यथा को चित्रित किया है। इस उपन्यास का नायक चंदन एक गरीव खेतीहर दलित मजदूर के 'छप्पर' में पैदा होता है परंतु अपने कार्यकर्तृत्व से वह फिनिक्स पंछी की भाँति रक्षा से निकलकर आस्मान की सैर करता है। उसका उर्ध्वगामी विकास गाँव के सवर्णो को चुभता है, जिससे उनके रास्ते में अनेक अवरोध खड़ा करके उसकी शिक्षा में अवरोध लाने का काम करते हैं। परंतु अम्बेड़करी विचारधारा से सन्न चंदन इन अवरोधों को लांघकर अपने लक्ष्य की पूर्ति

करता है। चंदन की विकास यात्रा में उसके पिताजी पहाड़ जैसे खडे रहकर उसकी हिम्मत के साथ मदद करते हैं। एक किसान मजदूर होकर भी अविचल रहकर गाँव के सवर्णों के विरोध का डटकर विरोध करते हैं। चंदन और उनके पिता सुक्खा की हिम्मत के सामने सवर्णों के अवरोधों के टीले ढह जाते हैं। परंपरागत कट्टर जातियता के रक्षक ठाकुर हरनामसिंह भी उनके मत में बदलाव करते हैं अपने किये पर पश्चाताप करते हैं। यहाँ चंदन ने गांधीवादी विचारधारा को प्रवाहित किया है। इस उपन्यास की नारी पात्र ठाकुर हरनामसिंह की बेटी रजनी को समाजवादी, साम्यवादी, मार्क्सवादी विचारों की वाहक बनाकर लेखकने परंपरागत सवर्णों के गुंजे हुए जातीय भेदाभेद को दूर करने का प्रयास किया है। ग्रामांचल के 'छप्पर' से महानगर के 'बंगले' तक चंदन की विकास यात्रा को दिखाकर लेखकने एक उच्चशिक्षित दलित की जीवन-यात्रा में आनेवाले ठहरावों को दिखाया है। साथ ही यह भी दिखाया है कि आज परंपरागत परिवेश की दीवारों को तोड़ने के लिए दलित जन- जीवन में चेतना की आवश्यकता पर बल दिया है। दुष्टों के मन परिवर्तन के लिए लेखक ने गांधीवादी विचारधारा को अपनाया है। जमींदारों की अगली पीढ़ी के विचारों में आयी बदलाव की स्थितियों को लेखक ने रजनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इसमें ठाकुर हरनामसिंह, रजनी, सुक्खा आदि की गौण कथाएँ आयी हैं। परंतु ये सारी कथाएँ दलित-सवर्ण संघर्ष को दिखाती रजनी के कारण एकात्म स्थितियों में लय होती है। कथा समाज-जीवन के साथ संपृक्त होती हुई दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

जयप्रकाश कर्दम जी ने विवेच्य उपन्यासों के कथ्य में दलित, पीड़ित, शोषण मानव का सूक्ष्म-व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण, बड़ी गहराई के साथ सम्यक अंकन किया है। इसमें मानवतावादी मूल्यों से निहित विचारों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर उनके मन मस्तिष्क को चेतित किया है।

'करुणा' इस लघु उपन्यास में भगवान गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित

सिद्धान्त और बौद्ध धर्म की महत्ता को स्पष्ट किया है। लेखक यहाँ स्पष्ट करते है कि सृष्टि में समस्त धर्मो में बौद्ध धर्म ही ऐसा धर्म है, जो बुद्धि और विवेक पर आधारित है। जो विश्वास पर आधारित नहीं है। वर्तमान समय में जातिवादी, वर्गवादी एवं सम्प्रदायवादी विचार उभारते रहें है, इस स्थिति में भगवान गौतम बुद्ध की तत्वज्ञान प्रणाली इस दिग्भ्रमित समाज को सही राह दिखा सकती हैं। समता, स्वतंत्रता, बंधुता तथा न्याय इन मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठापन बुद्ध सिद्धांतो की मूल धरोहर हैं। अत: प्रस्तुत उपन्यास 'करुणा' में बुद्ध तत्वज्ञान को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। अर्थात उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यासों का कथ्य मौलिकता तथा विश्वसनीयता आदि गुणों से ओतप्रोत हैं।

'छप्पर' उपन्यास में दलित समाज के दारिद्रय तथा शोषण के कारणों को स्पष्ट करते हुए उनमें शिक्षा से आयी जागृति को दर्शाया है। तथा समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा, धार्मिक पाखण्डता, ईश्वर के प्रति नकार दिखाकर सृष्टि में मनुष्य की सत्ता को सर्वोपरी महत्व प्रदान किया है। शिक्षित दलित युवकों द्वारा दलित समाज के उत्थान का कार्य जारी किया हैं।जिसमें उपन्यास का नायक चंदन प्रधान पात्र के रूप में द्रष्टव्य है। तथा हरिया, कमला और रजनी के माध्यम से मानवतावादी विचारधारा को दर्शाया हैं। ठाकुर हरनामसिंह की शोषक वृत्ति में परिवर्तन दिखाकर भारतीय समाज में समता तथा मानवतावादी धर्म की स्थापना करने की प्रेरणा दी है। शिक्षा व्यवस्था से समाजप्रबोधन यह मार्क्सवादी विचारधारा भी यहाँ प्रस्तुत करके जयप्रकाश जी ने साम्यवादी समाज व्यवस्था का सपना साकार करने का प्रयत्न किया है।

'करुणा' उपन्यास बौद्ध तत्वज्ञान के आधार पर समाज में शांति स्थापित करने का प्रयत्न करता है। भारत के विकास के लिए समता, बंधुता, स्वतंत्रता, न्याय की आवश्यकता विशद करता है। तो 'छप्पर' उपन्यास दलितों की आज की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालता है, दलितों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, बलात्कार,

अनहोनी आदि पर चिंतन करता है। दलितों में अन्याय के प्रति चेतना जागृति का काम करता है।

'करुणा' उपन्यास में करुणा द्वारा बौद्ध धम्म की दीक्षा लेकर बौद्धधर्म के सिद्धांतों की शांति के लिए आवश्यकता पर बल दिया है। सभी धर्म और धर्म के सिद्धांत अच्छे जरूर होते हैं परंतु धर्म के सिद्धांतों का मानवी मन के विकास के लिए उपयोग करने की अपेक्षा कई स्वार्थी लोग धर्म का संघर्ष के लिए प्रयोग करते हैं और समाज जीवन में अशांति का निर्माण करते हैं। इसी पृष्ठभूमि पर विश्वशांती के लिए बौद्धधर्म का तत्वज्ञान कितना आवश्यक है, इस पर लेखक ने बल दिया है।

'छप्पर' में जयप्रकाश जी दलित समाज परिवर्तन के लिए क्रांति की बातें जरूर करता है, परंतु इस क्रांति में आक्रोश नहीं, गांधीजी के सिद्धांतों के अनुसार शांतिपूर्ण क्रांति का नारा लगाकर विषम समाज व्यवस्था के पक्षधरों का मन परिवर्तन करते हैं। इतना ही नहीं विषम समाज व्यवस्था के वाहकों के परिवार में एकाध साम्यवादी प्रगतिवादी विचारधारा का पात्र निर्माण करके स्वस्थ समाज की संकल्पना को बढ़ावा देते है।

विवेच्य उपन्यास समाजाभिमुख होकर समाज में समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय आदि की स्थापना की पक्षधरता करते हैं। कथ्य की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास महत्त्वपूर्ण योगदान निभाते हैं और भारतीय समाज प्रबोधन की विकास यात्रा में सम्मिलित होते हैं।

संदर्भ संकेत :

1.	सं.पा.कालिका प्रसाद	-	'बृहत हिंदी कोश'	पृ.212
2.	फाउलर द इन साईज ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ करंट इंग्लिश			पृ. 263
3.	ई.एम.फास्टर एस्पेक्टस आफ दी न विल"			पृ.116
4.	डॉ.त्रिभुवन सिंह	-	'हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग'	पृ.168
5.	डॉ.प्रदीपकुमार वर्मा	-	'हिंदी उपन्यासों का शिल्पविधान'	पृ.51
6.	डॉ.शांति स्वरूप गुप्त	-	'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त'	पृ.362, 363
7.	डॉ.जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.3
8.	वहीं	-		पृ.16
9.	वहीं	-		पृ.59
10.	वहीं	-		पृ.19
11.	वहीं	-		पृ.19
12.	वहीं	-		पृ.20
13.	वहीं	-		पृ.57
14.	वहीं	-		पृ.71
15.	वहीं	-		पृ.45
16.	वहीं	-		पृ.46
17.	वहीं	-		पृ.46
18.	वहीं	-		पृ.49
19.	वहीं	-		पृ.65
20.	वहीं	-		पृ.32
21.	वहीं	-		पृ.71, 72

22. वहीं - पृ.50, 51

23. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - 'छप्पर' पृ.8

24. वहीं - पृ.69

25. वहीं - पृ.17

26. वहीं - पृ.18

27. वहीं - पृ.17

28. वहीं - पृ.39

29. वहीं - पृ.39

30. वहीं - पृ.41

31. वहीं - पृ.51

32. वहीं - पृ.74

33. वहीं - पृ.77

34. वहीं - पृ.78

35. वहीं - पृ.109

36. वहीं - पृ.32

37. वहीं - पृ.98

38. वहीं - पृ.24

39. वहीं - पृ.66

40. वहीं - पृ.64

41. वहीं - पृ.119

42. वहीं - पृ.33

43. वहीं - पृ.33

44. वहीं - पृ.34

45. वहीं - पृ.35

46. वहीं - पृ.35

47. वहीं - पृ.38, 39